

न्यायालय कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, चित्तौड़गढ़ (राज.)
पीठासीन अधिकारी इन्द्रजीत सिंह, आई.ए.एस.

प्रकरण संख्या 01/2016 (रा.गु.नि.)
पंजीयन दिनांक 11.01.2016

सरकार जरिये पुलिस अधीक्षक जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)

-प्रार्थी

बनाम

श्री मोहसिन पिता श्री अकबर खां जाति मुसलमान उम्र 28 साल निवासी नया बाजार,
निम्बाहेड़ा, थाना कोतवाली निम्बाहेड़ा जिला चित्तौड़गढ़

-गैरसायल

कार्यवाही : अन्तर्गत धारा 3 राजस्थान गुण्डा नियन्त्रण अधिनियम, 1975

उपस्थिति : 1- अभियोजन अधिकारी, राजकीय पैरोकार
2-श्री अशफाक खां, अधिवक्ता गैरसायल



निर्णय

दिनांक 03.07.2018

प्रकरण का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि प्रार्थी द्वारा गैरसायल के विरुद्ध राजस्थान गुण्डा नियन्त्रण अधिनियम, 1975 धारा 3 के तहत इस आशय की रिपोर्ट प्रस्तुत की है कि गैरसायल नया बाजार निम्बाहेड़ा, थाना कोतवाली, निम्बाहेड़ा, जिला चित्तौड़गढ़ का निवासी होकर उक्त व्यक्ति आपराधिक प्रवृत्ति का है। दिनों-दिन इसकी आपराधिक गतिविधियां बढ़ती ही जा रही है। यह जुआ सट्टा खेलने संबंधी अपराध करने का आदि है। इस व्यक्ति के भय से आम जनता इतनी भयभीत है कि कोई भी व्यक्ति इसके विरुद्ध गवाही देने का साहस ही नहीं करता है। अतः गैरसायल के विरुद्ध राजस्थान गुण्डा नियन्त्रण अधिनियम, 1975 धारा 3 के तहत कार्यवाही की जावे।

प्रकरण दर्ज रजिस्टर किया जाकर गैरसायल को तलब किया जाकर नोटिस सुनाया गया। गैरसायल की ओर से अधिवक्ता श्री अशफाक खां द्वारा अधिकार पत्र प्रस्तुत किया। गैरसायल ने नोटिस सुन-समझ कर आरोप अस्वीकार किये एवं जवाब प्रस्तुत कर ट्रायल चाही जिससे गैरसायल को आगामी तारीख पेशी पर उपस्थित होने

हेतु जमानत एवं मुचलके प्रस्तुत करने के आदेश दिये। गैरसायल द्वारा आदेश की पालना में मुचलका एवं जमानत पत्र प्रस्तुत किये जिसे शामिल पत्रावली किया गया।

अभियोजन अधिकारी द्वारा साक्ष्य पैरवी में श्री ईश्वरसिंह, हाल सेवानिवृत्त स. उ. नि., श्री महावीर सिंह हाल स. उ. नि. रिजर्व पुलिस लाईन, प्रतापगढ़ एवं श्री हरीसिंह, हाल स. उ. नि. थाना पारसोली के बयान कराये।

अधिवक्ता गैरसायल ने गैरसायल की ओर से कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं करके सीधे बहस हेतु निवेदन किया।

अभियोजन अधिकारी, पैरोकार सरकार का मुख्य कथन यह रहा कि गैरसायल आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है, दिनों-दिन इसकी आपराधिक गतिविधियां बढ़ती ही जा रही है। यह व्यक्ति जुआ सट्टा खेलने संबंधी अपराध करने का आदि है। इस व्यक्ति के भय से जनता इतनी भयभीत है कि कोई भी व्यक्ति इसके विरुद्ध गवाही देने का साहस ही नहीं करता है। गैरसायल के विरुद्ध वर्ष 2012 से वर्ष 2014 तक 3 प्रकरण दर्ज हुए हैं:-

- 1-प्रकरण संख्या 43/2012 13 आरपीजीओ एक्ट
- 2-प्रकरण संख्या 243/2014 13 आरपीजीओ एक्ट
- 3-प्रकरण संख्या 563/2014 13 आरपीजीओ एक्ट



गैरसायल को उक्त तीनों ही प्रकरणों में सजा हो चुकी है। उक्त प्रकरण में उपस्थित गवाहान ने भी अपने बयानों में गैरसायल का आपराधिक गतिविधियों में लिप्त होना व किसी भी व्यक्ति द्वारा इसके भय के कारण साक्ष्य नहीं देने के संबंध में इस्तगासे में अंकित तथ्यों की पुष्टि की है। गैरसायल के विरुद्ध दर्ज उक्त प्रकरणों के तथ्यों के आधार पर उसे गुण्डा घोषित करने के पर्याप्त आधार उपलब्ध है। अतः गैरसायल को गुण्डा घोषित करते हुए इस जिले से 6 माह की अवधि के लिए निष्काषित करने के आदेश फरमाये जावे।

गैरसायल के अधिवक्ता का मुख्य कथन यह रहा कि गैरसायल के विरुद्ध कोई आपराधिक प्रकरण दर्ज नहीं हुआ है। गैरसायल के विरुद्ध दर्ज उक्त प्रकरण 13 आरपीजीओ के होकर लोक अदालत की भावना से प्रेरित होकर स्वयं जुर्म स्वीकार किया। गैरसायल गरीब व्यक्ति होकर मेहनत मजदूरी कर अपने परिवार का बड़ी मेहनत से शान्तिपूर्वक भरण पोषण कर रहा है। मोहल्ले में कभी कोई शान्ति भंग नहीं की है, जिससे मोहल्ले में विपरीत प्रभाव पड़ता हो। गैरसायल के विरुद्ध किसी भी व्यक्ति द्वारा कोई शिकायत पुलिस में दर्ज नहीं कराई है। गैरसायल की पारिवारिक परिस्थितियों को देखते हुए सहानुभूति का रुख अपनाते हुए प्रकरण खारिज फरमाया जावे।

हमने उभय पक्ष की बहस पर मनन किया। प्रार्थी द्वारा प्रस्तुत इस्तागासा एवं उपलब्ध अन्य अभिलेखों का गहनता से अवलोकन किया। गैरसायल के विरुद्ध वर्ष 2012 से 2014 के बीच कुल 03 आर.पी.जी.ओ. एक्ट के प्रकरण दर्ज हुए हैं तीनों ही प्रकरण में गैरसायल को सजा हुई है। गैरसायल के विरुद्ध उक्त तीनों प्रकरण वर्ष 2014 तक दर्ज होकर तीनों ही प्रकरणों का निस्तारण हो चुका है। इसके बाद गैरसायल के विरुद्ध कोई प्रकरण दर्ज नहीं हुआ है तथा इसके बाद गैरसायल का जिले एवं उसके किसी भाग में धारा (2) के खण्ड (ब) के उपखण्ड 1 से 8 में वर्णित कार्य करने में रत होना एवं उनके दुष्प्रेरण में लगा हुआ होना भी नहीं पाया गया।

अतः गैरसायल को भविष्य में इस प्रकार के कृत्य नहीं करने की चेतावनी देते हुए, उसके परिवार की परिस्थितियों को मध्यनजर रख, सहानुभूति रखते हुए प्रार्थी द्वारा राजस्थान गुण्डा नियन्त्रण अधिनियम, 1975 धारा 3 के तहत गैरसायल को गुण्डा घोषित किये जाने हेतु प्रस्तुत इस्तागासा खारीज किया जाता है।

‘निर्णय खुले न्यायालय में सुनाया गया।’



(इन्द्रजीत सिंह)